



चिंतन और समस्या समाधान

विचार कीजिए, जब आप सोने जा रहे थे, आपने अंतिम कार्य क्या किया था? आपने आज क्या किया है और कल क्या करना है? इसकी योजना बनाने को पाठ करना कहते हैं। इसी प्रकार जब आप जागते हैं तो सबसे पहले सोचते हैं कि आप आज क्या-क्या करेंगे? ये दोनों अवस्थाएँ बताती हैं कि कोई क्षण ऐसा नहीं है, जब आप चिंतन नहीं कर रहे होते हैं। खरीददारी के लिए बाहर जाते हुए, कपड़े धोते हुए, नाश्ता बनाते हुए, अपना कार्य अपने बॉस के सामने पेश करते हुए, दवाई लेते हुए और अन्य सभी कार्य करते हुए, सोच रहे होते हैं। यहाँ तक कि जब तक हम गहरी नींद में नहीं जाते हैं, हमारा दिमाग शांत नहीं रहता है और हम लगातार सोचते रहते हैं।



अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ के अध्ययन के बाद, शिक्षार्थी:

- चिंतन की प्रकृति को समझते हैं;
- चिंतन की आधारभूत प्रक्रियाओं की विस्तृत जानकारी प्राप्त करते हैं;
- भाषा और विचार के बीच का संबंध विश्लेषण करते हैं; और
- स्वयं पर तर्क व्यवहार, समस्या समाधान और निर्णय कौशल के ज्ञान का उपयोग करते हैं।

11.1 चिंतन का स्वरूप

हमारा जीवन वस्तुओं, लोगों और परिस्थितियों को समझने के इर्द-गिर्द घूमता है। चिंतन, तर्क, निर्णय, समस्या, समाधान जैसी प्रक्रियाओं में हमारे जगने का सर्वाधिक समय जाता है इसलिए, इन प्रक्रियाओं के दौरान क्या होता है, इसे समझना बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है।

बुनियादी मनोवैज्ञानिक
प्रक्रियाएँ



टिप्पणी

संज्ञान एक सामान्य पद है, जिसका उपयोग सभी उच्चतर मानसिक प्रक्रियाओं के संदर्भ में होता है। यह एक वृहद पद है, जिसमें चिंतन से संबंधित विभिन्न मानसिक क्रियाएँ, निर्णय, भाषा, स्मृति और दूसरी उच्चतर मानसिक क्रियाएँ सम्मिलित हैं।

अधिकतर मनुष्यों के जागने के समय (घंटे) यहाँ तक की सोते हुए और स्वप्न की अवस्था में भी चिंतन शामिल होता है। नहीं सोचना असंभव ही है। चिंतन के इस भाग को पढ़ते हुए भी आपके विचार और संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ क्रियाशील हैं। जब आप पढ़ना छोड़ देंगे आपका चिंतन कहीं और स्थानांतरित हो जाएगा। संभवतः इस बात की ओर कि आप आगे क्या करेंगे या कल क्या करेंगे। लेकिन यह (चिंतन) कभी रुकता नहीं है।

मानव चिंतन में सूचनाओं का प्रसंस्करण, व्यवस्थापन और प्रबंधन शामिल है। इसमें वे सभी प्रक्रियाएँ सम्मिलित हैं जो उद्दीपकों के ग्रहण से प्रतिक्रिया उत्पन्न होने के बीच होती हैं। इसलिए इसमें परिवेश और वातावरण के साथ-साथ स्मृति में संग्रहित सूचनाओं, प्रतीको, अवधारणाओं और छवियों के संज्ञानात्मक पुनर्व्यवस्था या सूचनाओं में जोड़-तोड़ की आवश्यकताओं होती है। कोई प्रतीक या छवि वातावरण में किसी घटना या स्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

एक घड़ी खरीदने की साधारण गतिविधि पर विचार करें। आपने कई बॉक्स, उनके मूल्यों और गुणवत्ता (उद्दीपक) के बारे में सूचनाएँ एकत्रित की और अंत में आपने एक घड़ी खरीद (प्रतिक्रिया) ली।

इस प्रकार, संग्रहण, तुलना और व्यवस्थापन से निष्कर्ष तक पहुँचने की प्रक्रिया चिंतन कहलाती है।

- कुछ चिंतन पूर्णतः निजी होते हैं, जिनमें प्रतीकों के निजी अर्थ होते हैं, स्वली चिंतन कहलाते हैं। जैसे- खुली आंखों से सपने देखना।
- चिंतन के कुछ अन्य प्रकार भी हैं, जिस का लक्ष्य समस्या समाधान या नया सृजन होता है, वे निर्देशित चिंतन के अंतर्गत आते हैं। जैसे- किसी पर पहुँचने का रास्ता ढूँढना

चिंतन में हम जिन प्रतीको का उपयोग करते हैं वे प्रायः अवधारणाओं, छवियों शब्दों या प्रस्तावों के रूप में होते हैं। इस प्रकार चिंतन के प्रमुख तत्व हैं अवधारणाएँ कल्पना और प्रस्ताव, आइए सभी को एक-एक कर समझते हैं।

11.1.1 अवधारणाएँ

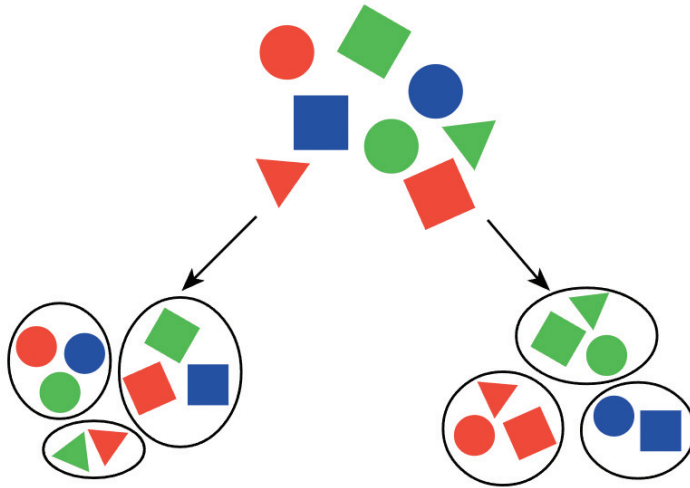
अवधारणाएँ चिंतन में उपयोग की जाने वाली महत्वपूर्ण भाषा प्रतीक हैं। एक अवधारणा विभिन्न वस्तुओं और घटनाओं का प्रतिकात्मक निर्माण है जो उसकी सामान्य विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। जैसे- आयु, रंग, प्रेम, माता आदि की अवधारणा हमारी शब्दावली की



ज्यादातर संज्ञाएँ अवधारणाओं के नाम हैं। अवधारणा निर्माण का मुख्य उद्देश्य वस्तुओं का श्रेणियों में वर्गीकरण करना है। ये विविध अनुभवों विचारों घटनाओं परिस्थितियों और वस्तुओं की मानसिक श्रेणियों के लिए है।

हमारे द्वारा चुनी गई विशेषता या विशेषताएँ अवधारणा को परिभाषित करती हैं और वर्गीकरण करने का आधार बनाती है। जब कोई वर्गीकरण किया जाता है तो हम उसके अनुरूप व्यवहार करने लगते हैं और वर्ग के सदस्य के बारे में उसी तरीके से सोचते हैं। अवधारणाएँ हमें हमारे आस-पास के संसार का बोध कराती हैं।

जैसे- इसका ज्ञान कि सेब एक फल है और मेज फल नहीं है, यह विभिन्न वर्गीकरण से अवधारणा के रूप में आता है।



चित्र 11.1 अवधारणा निर्माण

अवधारणा निरूपण में वर्गीकरण

अवधारणा की विभिन्न श्रेणियाँ हैं। तार्किक/ कृत्रिम अवधारणा प्रमुख है। तार्किक/ कृत्रिम अवधारणा को नियमों या गुणों के समूह द्वारा आसानी से परिभाषित किया जा सकता है। जैसे- एक वर्ग, वर्ग तब होता है जब इसकी चारों भुजाएँ और चारों कोण (90 डिग्री) के होते हैं, बराबर होते हैं।

प्राकृतिक अवधारणाएँ: ये गुणों के स्पष्ट-सटीक समुच्चय पर आधारित नहीं हैं। प्राकृतिक अवधारणाओं की सीमाएँ परिभाषित करने वाली विशेषताओं का कोई स्पष्ट या निर्दिष्ट समुच्चय नहीं है। फिर भी प्राकृतिक अवधारणाएँ प्राकृतिक दुनिया के पहलुओं को अधिक सटीकता से दर्शाती हैं। प्राकृतिक अवधारणाएँ प्रायः आदर्श पर आधारित होती हैं। बाहरी दुनिया के साथ हमारे अनुभव से आदर्श उभरते हैं और फिर नई चीजें जो संभवतः उनकी श्रेणी में उपर्युक्त होती हैं, उनसे उनकी तुलना की जाती है। नई वस्तुएँ मौजूदा आदर्श से जितनी

बुनियादी मनोवैज्ञानिक
प्रक्रियाएं



टिप्पणी

विशेषताएँ साझा करती हैं, उनकी अवधारणाओं के अंतर्गत शामिल होने की संभावना उतनी ही अधिक होगी। जैसे- जब हम फल के बारे में सोचते हैं तो सेब सोचते हैं, टमाटर नहीं। जबकि दोनों ही फल हैं। सामान्यतया, अवधारणाओं को उनके गुणों या विशेषताओं के संदर्भ में दर्शाया जाता है लेकिन प्राकृतिक अवधारणा को (वस्तुओं और घटनाओं के मानसिक प्रतिनिधि) दृश्य कल्पना के रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है।



क्रियाकलाप

अपने जीवन की दो प्राकृतिक अवधारणाओं के बारे में और उनके आदर्शों के बारे में सोचें।

11.1.2 प्रतिमाएं

चिंतन में प्रायः दृष्टि प्रतिमाओं का जोड़-तोड़ शामिल होता है। अनुसंधान स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि मानसिक जोड़-तोड़ का प्रदर्शन उसी के समान वास्तविक वस्तुओं के प्रदर्शन पर किया जाएगा। उदाहरण- जब हमें एक खेल विद्यालय की प्रतिमा बनाने को कहा जाय तो हम विद्यालय के विभिन्न भागों में सभी खिलौनों की किताबें, खेल के मैदान में खेल सामग्री और दीवारों पर चित्रकारी इत्यादि के बारे में सोचते हैं।

प्रतिमाएँ पर्यावरण से प्राप्त सूचनाओं या पर्यावरण के हमारे अनुभवों का प्रतिरूप होती है, जिनका उपयोग कोई बाद के समय में कर सकता है। सामान्यतः ये हमारी स्मृति में संग्रहित होती हैं।

अवधारणाएँ उन योजनाओं और संज्ञानात्मक रूपरेखाओं से संबंधित हैं, जो संसार के बारे में हमारे ज्ञान और धारणाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। सामान्यतः मानसिक चित्रण और अधिक जटिल होते हैं, जिसमें कई भिन्न विशिष्ट अवधारणाएँ शामिल होती हैं। जैसे - ईश्वर का स्कीमा (मानसिक चित्रण) (इसमें आध्यात्मिकता, धार्मिकता तथा मूर्ति पूजा की अवधारणा शामिल है।) इसलिए अवधारणाएँ मष्तिष्क में कई तरीकों में निरूपित की जा सकती हैं और हमारे आस-पास की जटिल बाहरी दुनिया को अर्थपूर्ण बनाती हैं।

11.1.3 प्रस्ताव

प्रस्ताव कथन हैं जो या तो एक अवधारणा या अवधारणाओं के बीच का संबंध बताते हैं। चिंतन में एक अवधारणा का संबंध दूसरी अवधारणा से जोड़कर देखना या एक अवधारणा की एक विशेषता को संपूर्ण अवधारणा से जोड़ना शामिल है। मनुष्य के रूप में हमारे पास अत्यधिक विकसित भाषा कौशल है-ये संज्ञानात्मक क्रियाएँ प्रस्तावों-वाक्यों का रूप लेती हैं जो कि एक अवधारणा दूसरे से संबंधित होती हैं। जैसे- सीता के बाल काले हैं।



यहाँ एक अवधारणा और उसकी गुणों के बीच के संबंध का वर्णन है।

प्रस्तावों के समूह को मानसिक मॉडल के रूप में दर्शाया जाता है। ज्ञान संरचना जो कि हमारे आस-पास की दुनिया में वस्तुओं और घटनाओं के साथ हमारी वार्तालापों का मार्गदर्शन करती है।

11.1.4 चिंतन में संस्कृति की भूमिका

मनोविज्ञान मन और संस्कृति को अविभाज्य मानता है। मन और संस्कृति पारस्परिक घटक है। लोग केवल अपनी संस्कृति से आकार नहीं लेते हैं, बल्कि उनकी संस्कृति भी उन से आकार लेती है। इसलिए प्रभाव दोनों तरफ है। अलग-अलग व्यक्तियों का चिंतन अलग सांस्कृतिक मानकों का निर्माण और उनके व्यवहार को प्रभावित कर सकता है और ये मानक किसी व्यक्ति के चिंतन के स्वरूप और व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं। याद करें हम किस प्रकार तर्क करते हैं? हम क्या तर्क करते हैं? और हम निर्णय लेते समय अलग-अलग विकल्पों को कितना महत्व देते हैं?

उदाहरण के लिए- एक पितृसत्तात्मक परिवेश में रहना एक सांस्कृतिक परिवेश जहाँ महिलाओं को दबाया जाता है परिवार और आजीविका में से एक का चुनाव पारिवारिक द्वंद्व का कारण बन सकता है। चिंतन में लक्ष्य प्राप्ति के लिए विभिन्न प्रक्रियाएँ तर्क और निर्णयन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।



पाठगत प्रश्न 11.1

खाली स्थानों को भरें:

1. चिंतन नितांत निजी है इसमें संकेतों के व्यक्तिगत अर्थ होते हैं।
2. जो वाक्यांश एक अवधारणा व दूसरी अवधारणा से संबंधित होते हैं वह..... कहलाते हैं।
3. अवधारणा में विशेषताओं को परिभाषित करने वाले निर्दिष्ट विशेषताओं के समूह नहीं होते हैं।

11.2 समस्या समाधान

समस्या समाधान एक लक्ष्य निर्देशित व्यवहार है। यह एक स्थिति से दूसरी स्थिति के बीच की व्यक्ति की विसंगति को कम करने की आवश्यकताओं से प्रेरित होता है।

सरल शब्दों में समस्या समाधान को इच्छित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रतिक्रियाओं

बुनियादी मनोवैज्ञानिक
प्रक्रियाएं

टिप्पणी

में से किसी एक को चुनने या विकसित करने के प्रयास के रूप में देखा जा सकता है। समस्या समाधान की प्रक्रिया विभिन्न चरणों के माध्यम से इच्छित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए चलती रहती है।

- **समस्या का निर्धारण और समझ:** मौजूदा विशेष समस्या की पहचान करना और आवश्यक कारणों का समाधान करना।
- **परिकल्पना या संभावित समाधान का निर्माण:** परिकल्पना किसी समस्या का अस्थायी उत्तर है। इस प्रक्रिया के लिए उच्च कोटि का चिंतन, सूचना संग्रहण, मौजूदा सूचनाओं का मिलान और तब संभावित समाधान प्राप्त होता है।
- **परिकल्पना की जाँच-प्रत्येक विकल्प यथा संभावित समाधान का मूल्यांकन:** इसके बाद, प्रत्येक समाधान से जुड़ी लागत का वर्गीकरण कर उसमें से सबसे उपयुक्त का उपयोग किया जाता है।
- **पहले के चरणों में आवश्यक संशोधन और परिणामों का मूल्यांकन:** एक बार समाधान प्रयुक्त होने के बाद परिणाम का मूल्यांकन महत्वपूर्ण हो जाता है और यदि इच्छित परिणाम प्राप्त नहीं होते हैं तो प्रारंभिक चरणों में संशोधन करना पड़ता है।

11.2.1 समस्या समाधान के तरीके

सबसे सरल समस्या समाधान संस्करणकोण प्रयत्न तथा भूल (यहाँ जब तक एक प्रतिक्रिया कार्य करती विभिन्न प्रतिक्रियाओं के प्रयास होते हैं।)

दूसरे में एल्गोरिथम (ये प्रक्रियाओं का एक निश्चित अनुक्रम है यदि इनका पालन एक विशेष तरीके से किया जाए तो समाधान स्वतःउत्पन्न होता है।

तीसरा है ह्यूरिस्टिक्स या अनुमान (ये सामान्य नियम होते हैं जो पूर्व अनुभवों पर आधारित होते हैं और मानसिक शॉर्टकट (Mental Shortcut) है, जो वांछित समाधान तक ले जा भी सकते हैं और नहीं भी। अगला है एनालॉजी या समानता (ऐसी तकनीकों का प्रयोग जो अतीत में समान स्थिति में काम आई हो।) कई बार हम अतीत में प्रयोग किए जाने वाले तरीकों का ही समस्या समाधान में उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए यदि हम देर रात तक भूखे हों तो हमें यह पता होता है कि हाइवे पर खाना मिलने की संभावना है।

अंतिम है मीन्स-एंड विश्लेषण (Means End Analysis) इसमें हम समस्या या लक्ष्य को उपलक्ष्यों और पथ में विभाजित करते हैं। इस तरीके में हम समस्या को चरणबद्ध तरीके से हल करने की योजना बनाते हैं। इसमें समस्या समाधान करने वाला पहले समस्या समाप्ति की

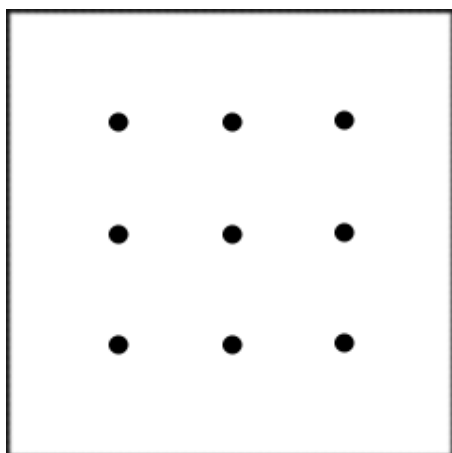


अवधारणा बनाता है और फिर लक्ष्य की ओर ले जाने वाली विभिन्न रणनीतियों की तलाश करता है। इसलिए यह पश्चगामी सोच का एक रूप है। यह लक्ष्य से शुरू होकर, वर्तमान में लक्ष्य की ओर बढ़ने की रणनीति तक पहुंचाती है।

11.2.2 समस्या समाधान में बाधाएं

मानसिक सेट : जब आप एक विशेष तरीके से एक समस्या का समाधान करते हैं तो यह एक सेट (प्रणाली) बन जाती हैं। ये पहले से मानसिक क्रियाओं या चरणों में उपयोग हो चुकी होती हैं। यह कुछ परिस्थितियों में सफलता भी प्राप्त करती हैं लेकिन एक प्रकार की मानसिक दृढ़ता पैदा करती है। जो परोक्ष रूप से समस्या समाधान के लिए नए तरीके से नियमों और रणनीतियों के लिए बाधा की तरह कार्य करती है।

कार्यात्मक स्थिरता: इस का मतलब किसी विशेष वस्तु या चीज के कार्य को केवल उसके हो चुके उपयोग को देखना है। यहाँ स्थिरता से तात्पर्य हमारी चीजों के सामान्य कार्य के स्थिर होने से है। वस्तुओं का उसी प्रकार उपयोग करने की हमारी प्रबल प्रवृत्ति होती है जैसा कि उनका पहले उपयोग हो चुका होता है।



चित्र 11.2

11.2.3 समस्या समाधान में बाधाओं पर काबू

मानसिक सेट और कार्यात्मक स्थिरता विविध व्यवहार में समस्या समाधान की क्षमता को कम करता है। इन बाधाओं से उबरने के लिए जीवन के प्रत्येक चरण में क्रियात्मकता में वृद्धि महत्वपूर्ण है। विचार मंथन (लोग कई तरह से एक स्थिति से निपटने को देखते हैं और उसके लिए बड़ी संख्या में समाधान ढूँढ लेते हैं। कार्यात्मक स्थिरता से उबरने में सहायक हो सकता है।

बुनियादी मनोवैज्ञानिक
प्रक्रियाएं

टिप्पणी

समस्याओं को पूर्णता में देखने के अलावा उसे टुकड़ों में बाँटना भी एक उपयोगी तरीका हो सकता है। सांस्कृतिक प्रशिक्षण और प्राथमिक अभिभावक अभ्यास एक व्यक्ति के समस्या समाधान की बाधाओं को न्यूनतम करने का सबसे अच्छा तरीका है।

11.3 तर्क

हम जब भी कोई विशेष व्यवहार देखते हैं तो हम उसके व्यवहार के पीछे के कारणों के बारे में आँकलन की कोशिश करते हैं। जैसे मेट्रो में एक रोती महिला के बारे में आप तय करते हैं कि उसका पति से झगड़ा हुआ है। ये सब तर्क करने का भाग है। तर्क एक संज्ञानात्मक क्रियाकलाप है। जिसमें हम सूचनाओं का रूतांतरण विशेष निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए करते हैं। तर्क करने की एक प्रक्रिया है जो औपचारिक तर्क और रोजमर्रा के तर्क के बीच अंतर करती है।

औपचारिक तर्क करने में विशिष्ट पद्धति शामिल होती है; इसका उपयोग औपचारिक समुच्चय या सीधी समस्याओं या परस्थिति में किया जाता है।

प्रतिदिन तर्क करना हमारे दैनिक जीवन में शामिल है। यह अधिक जटिल व कम परिभाषित होता है। इसमें अनेक संभावित कारण विभिन्न गुणवत्ता और प्रभावशीलता में शामिल होते हैं। हमारे रोजमर्रा के वर्क में मनोदशा और विश्वासों का उच्च उपयोग शामिल होता है। इसलिए कभी-कभी यह हमारी तर्क करने की क्षमता को कम कर देते हैं

11.3.1 तर्क के प्रकार

तर्क करना हमारी दैनिक जीवन में शामिल है। यह अधिक जटिल और कम परिभाषित है और इसमें अलग-अलग संभावित कारणों में भिन्न गुण और प्रभाव शामिल होता है। हमारी रोज की तर्क में आस्था और विश्वास का अधिकतम उपयोग शामिल है। इस प्रकार कभी-कभी यह हमारे तर्क की क्षमता को कम करता है।

निगमनात्मक इसकी शुरुआत एक धारणा से होती है। इस प्रकार, हम सामान्य धारणा से शुरुआत करते हैं कि हम जानते हैं या विश्वास करते हैं और विशेष निष्कर्ष तक पहुँचते हैं। यह सामान्य से विशिष्ट तर्क है। जैसे- आप जानते हैं कि सामान्यतः अपने पति से झगड़ा होने पर महिला रोती हैं इस प्रकार आप कल्पना करते हैं कि इसी कारण से महिला रो रही है लेकिन यह सत्य हो भी सकता है या नहीं भी।

आगमनात्मक- इस प्रकार के तर्क विशिष्ट तथ्यों या अवलोकन पर आधारित होते हैं। यहाँ हम विशेष अवलोकन के आधार पर सामान्य निष्कर्ष निकालते हैं। उदाहरण निष्कर्ष सभी महिलाएँ लड़ाई के बाद एक या दो घटनाएँ देखकर ही रोने लगती है। यहाँ हम तुलना करते हैं और भविष्यवाणी।

इस प्रकार तर्क करने को सूचनाओं के संग्रहण और विश्लेषण से निष्कर्ष तक पहुँचने की प्रक्रिया के रूप देखा जा सकता है। यहाँ घटनाओं का मूल्यांकन और उचित निर्णय के साथ विचार बनाया जाता है।



पाठगत प्रश्न 11.2

1. निम्नलिखित का मिलान कीजिए-
 - अ) एल्गोरिथम
 - ब) अनुमानिक/हयूरिस्टिकक्स
 - स) आगमनात्मक तर्क करना
 - ड) मानसिक सेट (समूह)
- i. विशिष्ट तथ्यों और अवलोकन पर आधारित
- ii. एक समस्या का विशेष तरीके से समाधान
- iii. सामान्य नियम
- iv. यदि प्रक्रिया के सटीक अनुक्रम का पालन विशेष ढंग से किया जाए तो स्वतः समाधान उत्पन्न होता है।

11.4 निर्णयन

यह कुछ विकल्पों को अस्वीकार करते हुए विभिन्न विकल्पों में से किसी एक को चुनने की प्रक्रिया है। सामान्य भाषा में यह एक प्रकार का समस्या समाधान है जिसमें हम कई विकल्पों की उपस्थिति में से सबसे उपर्युक्त का चयन करते हैं। यह **उपयोगिता** और **व्यक्तिपरक संभावना** दोनों के विचार से तार्किक निर्णय के लिए विभिन्न तरीको या विकल्पों के बीच चयन करने की एक प्रक्रिया है।

- प्रत्येक विकल्प से प्राप्त होने वाले परिणामों की उपयोगिता या मूल्य
- वास्तव में ऐसे परिणामों के घटित होने की संभावना

11.4.1 निर्णयन के चरण

लोग आम तौर पर अपनी व्यक्तिपरक उपेक्षित उपयोगिता को अधिकतम करने वाले निर्णय लेते हैं। दूसरे शब्दों में हम दिए गए विकल्पों में से उपयोगिता और व्यक्तिपरक संभावना के विचार से उनके साथ-साथ गुणा करके सबसे अधिक उत्पाद वाले विकल्प का चयन करते हैं।

11.4.2 निर्णयन के बाधाएं

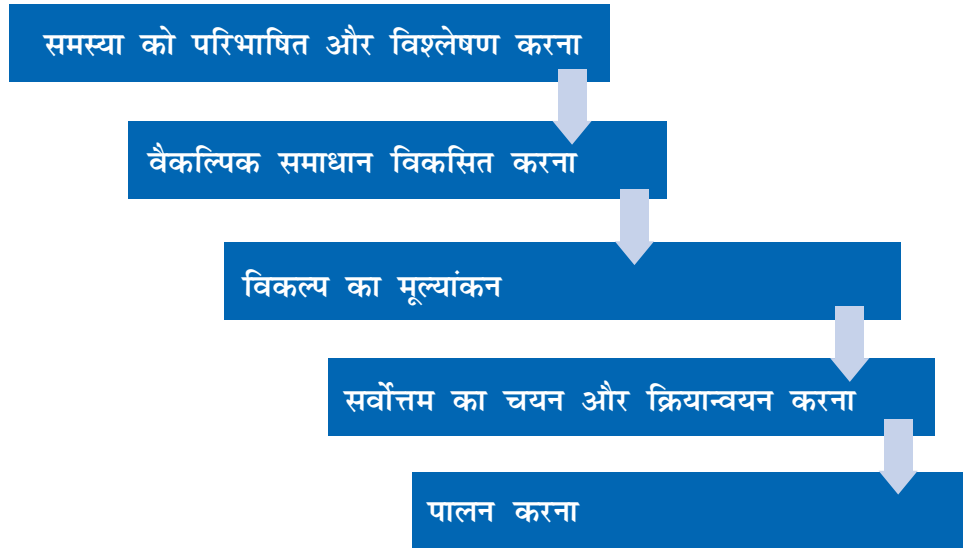
निर्णयन करने की प्रक्रिया को प्रभावित करने और इसे कम प्रभावी बनाने वाले कई कारक हैं। ये निर्णय लेने में बाधा के रूप में कार्य करते हैं। कुछ सामान्य बाधाएँ निम्नवत हैं :-



बुनियादी मनोवैज्ञानिक
प्रक्रियाएं



टिप्पणी



चित्र 11.3 निर्णयन की प्रक्रिया

- **जानकारी/ सूचना का अभाव-** गलत सूचनाएँ या आधी-अधूरी सूचनाएँ हमेशा बुरे निर्णयों तक ले जाती हैं।
- **परिपेक्ष्य का अभाव-** समस्या और समाधान के बीच बेमेल संबंध समस्या के वास्तविक संदर्भ को न जानने से समस्या उत्पन्न होती है।
- **प्रतिपुष्टि का अभाव-** समाधान की प्रक्रिया और निर्णयों का पालन महत्वपूर्ण है ताकि भविष्य में उसी प्रकार की गलतियों का दोहराव नहीं हो।
- **सूचना अधिभार-** किसी समस्या के बारे में बहुत अधिक जानकारी भी निर्णय लेने में बाधा का कारण बन सकती है, क्योंकि समय और प्रयास सीमित संसाधन हैं।
- **सांस्कृतिक बाधाएँ-** सांस्कृतिक मानक और अभ्यास भी प्रभावी निर्णयन में बाधा हो सकती है।
- **अतिआत्मविश्वास-** किसी के निर्णय पर विश्वास महत्वपूर्ण है लेकिन जोखिम कारक की गणना के बिना अतिआत्मविश्वास गलत निर्णय की ओर ले जाता है।
- **पुष्टिकरण पूर्वाग्रह-** यहाँ एक व्यक्ति खोजता है, अन्वेषण करता है और सूचनाओं की व्याख्या करता है, जो उनके मान्यताओं और विचारधारा की पुष्टि करती है। इससे एक समस्या के भिन्न सोच और आलोचनात्मक विश्लेषण दोनों में बाधा उत्पन्न होती है और अंततः एक गलत निर्णय की ओर ले जाता है।
- **प्रतिबद्धता में वृद्धि-** गलत निर्णयों के प्रति अधिक प्रतिबद्ध होने की प्रवृत्ति उससे जुड़ी हुई हार के नुकसान में वृद्धि करती है।



क्रियाकलाप 11.3

किसी द्वंद्व वाली परिस्थिति को याद करें जब आपको विकल्पों के बीच चुनाव करना था अब निर्णय लेने के चरणों का पालन करें और उपर्युक्त विकल्प की प्राप्ति के बारे में सोचें।

11.4.3 अनुमान/हयूरिस्टिक्स

जैसा कि पहले चर्चा की गई है कि अनुमान मानसिक नियम है जो हमें त्वरित और कुशल निर्णय लेने की अनुमति देते हैं। अनुमान हमारी निर्णय लेने की क्षमता को आसान बनाते हैं। ये संज्ञानात्मक लघुमार्ग हमारे प्रयासों को कम करते हैं लेकिन हमारे निर्णयों की गुणवत्ता या सटीकता बढ़ा भी सकते हैं और नहीं भी। अनुमान हमारे अनुभव से निकलते हैं और अच्छे विकल्पों की शीघ्रता से चुनने में सरल दिशानिर्देशों के रूप में कार्य करते हैं। सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले अनुमान हैं-

1. **उपलब्धता-** यह घटना की आवृत्ति या संभावना के बारे में निर्णय लेने की प्रवृत्ति है कि उनके उदाहरणों की कितनी आसानी से दिमाग में लाया जा सकता है।

उदाहरण- कन्नमैन (1974) द्वारा एक अध्ययन किया गया जिसमें प्रतिभागियों को नामों की सूची दी गई और पूछा गया कि सूची में महिला या पुरुष के नाम में किसकी अधिक संख्या है? महिला और पुरुष के नामों की संख्या लगभग समान थी लेकिन 80 प्रतिशत प्रतिभागियों ने बताया कि महिलाओं के नाम अधिक हैं। इसका कारण यह था कि सूची में प्रसिद्ध महिलाओं के नाम थे। इसलिए आसानी उनके नाम याद हो गए।

2. **प्रतिनिधित्व-** इस प्रकार का अनुमान बताता है कि एक घटना या वस्तु अधिक बारीकी से किसी अवधारणा या स्थिति के विशिष्ट उदाहरणों से मिलती जुलती है जो संभवतः उस अवधारणा स्थिति या श्रेणी से संबंधित है। यहाँ यह देखा गया है कि क्या वर्तमान स्थिति पहले से ही अनुभव किए जा चुके घटना का प्रतिनिधित्व है। उदाहरण अगर हम किसी नए व्यक्ति से मिलते हैं जो हमेशा औपचारिक कपड़े पहनता है और आप से उस व्यक्ति के व्यवसाय का मूल्यांकन पूछा जाय। आप सबसे पहले अपने गत अनुभवों को याद करेंगे और मान लेंगे कि आमतौर पर शिक्षक औपचारिक कपड़े पहनते हैं इस लिए वह एक शिक्षक है लेकिन अंततः आपको पता चलता है कि वह एक बावर्ची है। इस तरह परिस्थितियों के बीच उपलब्धता या समानता इस प्रकार के निर्णय तक ले जाती है।

3. **संचालन और समायोजन-** यहाँ हम एक निश्चित व्यक्तिपरक संभावना के आधार पर शुरूआत करते हैं और परिस्थितियों के आधार पर इसे घटाते-बढ़ाते हैं। जब हम यह



बुनियादी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं



टिप्पणी

समायोजन करते हैं तब परिणाम आरंभिक बिंदु पर निर्भर होते हैं। अगर हम एक उच्च अनुमान से शुरू करते हैं तो इसके नीचे की ओर के समायोजन के बाद भी हमारा संभावित अनुमान हमारे कम अनुमान की शुरुआत से अधिक होगा। यह वैसा ही है जैसे एक संचालक ने प्रारंभिक स्तर पर हमारे अनुमान को पक्षपातपूर्ण बताया और इसलिए यह पक्षपाती प्रभाव संचालन कहलाता है।

उदाहरण- कन्मैन के द्वारा अध्ययन एक समूह के लोगों को पाँच सेकेण्ड में $8 \times 7 \times 6 \times 5 \times 4 \times 3 \times 2 \times 1$ का अनुमान पूछा गया। और दूसरे समूह को इतने ही समय में $1 \times 2 \times 3 \times 4 \times 5 \times 6 \times 7 \times 8$ का उत्पाद अनुमान। चूँकि उनके पास अलग-अलग संचालक थे, पहले समूह ने अधिक उत्पाद और दूसरे ने उससे बहुत कम जबकि दोनों समान होंगे, संचालन पक्षपात स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

4. **गुण-प्रतिस्थापन-** इसका दूसरा नाम प्रतिस्थापन पूर्वाग्रह है। यहाँ व्यक्ति गलत प्रतिस्थापन रखकर एक समस्या का समाधान करता है। वे अनजाने में एक कठिन समस्या को एक आसान समस्या से बदल देते हैं। मन के लिए जो भी उपलब्ध है चुना जाता है बजाय इसके कि क्या आवश्यक है?

उदाहरण- दृष्टिभ्रम इसके लिए सबसे अच्छे उदाहरण हैं। जीवनचर्या में कभी-कभी हम एक त्रिविमीय चित्र को द्विविमीय के रूप में ग्रहण करते हैं दूसरा उदाहरण अनजाने में जो पूछा गया है उसके समान किसी और के बारे में बात करना



चित्र 11.4 निर्णय को प्रभावित करने वाले कारक



पाठगत प्रश्न 11.3

निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'सही' है और कौन-सा 'गलत' है?

1. प्रतिनिधित्व और उपलब्धता अनुमान के प्रकार हैं।
2. सांस्कृतिक और सामाजिक मुद्दे एक व्यक्ति के निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित नहीं करते हैं।
3. संचलन और समायोजन निर्णयन के चरणों में से एक हैं।

11.5 रचनात्मक चिंतन

रचनात्मक चिंतन में काफी मात्रा में प्रतीकों की अचेतन पुनर्व्यवस्था शामिल होती है। इस में नए और मौलिक विचारों समाधानों या वस्तुओं का उत्पादन शामिल है। यह अन्य प्रकार के चिंतन से भिन्न है यहाँ पर विचार नए और मौलिक दोनों होते हैं। सामान्यतः समाधानों की विशिष्टता जिनका पहले उपयोग नहीं किया गया है, रचनात्मकता का क्षेत्र बनता है।

यहाँ विचारक थोड़ी प्रगति करता है लेकिन आकस्मिक परिस्थितियों से प्रेरित हो कर एक नया विचार सहज तरीके से जागरूकता या चेतना में उभरता है। नए विचारों का अचानक प्रकटीकरण सूझ कहलाती है। विचार एक संदंभ्र विशेष में उपयुक्त भी होना चाहिए। कार्यकुशलता एवं कार्यप्रणाली ही विचार का महत्व तय करती है। इसलिए कोई भी चिंतन जो रचनात्मक, उचित, वास्तविकता-उन्मुख, नवीन और वांछनीय हो रचनात्मकता शीर्षक के अंतर्गत आता है।

जे.पी. गिलफोर्ड रचनात्मक चिंतन के अग्र-दूत थे। उन्होंने चिंतन के प्रमुख दो प्रकार बताए।

अभिसारी- यहाँ दिमाग एक समस्या के समाधान का अभिसरण करता है जिसका केवल एक ही समाधान संभव होता है। सामान्यतः अभिसारी चिंतन का परिणाम किसी के द्वारा पहले से लाया गया होता है। जैसे $2-1=1$

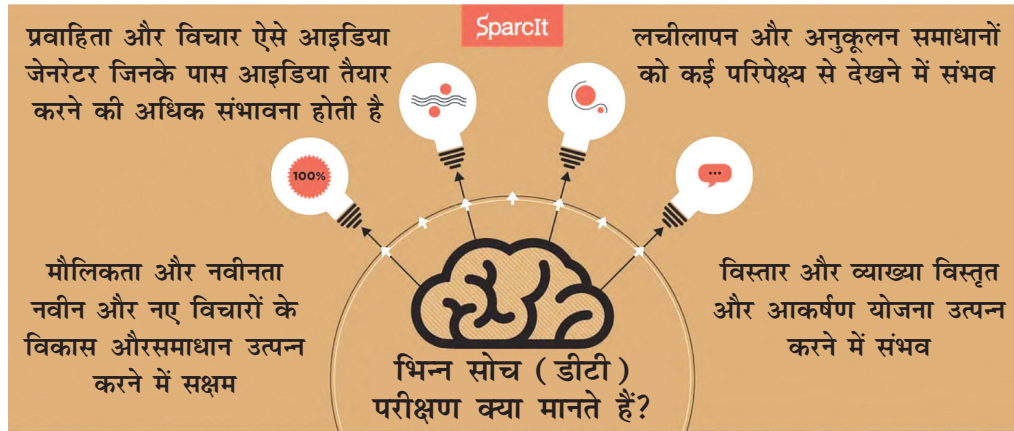
अपसारी- इसमें मुक्तोत्तर प्रश्न शामिल हैं, जहाँ एक विशेष समस्या का कोई निर्धारित उत्तर नहीं है। ऐसा चिंतन जहाँ न तो कोई निश्चित स्वरूप होता है और न ही समाधानों की संख्या हो पाती है, सामान्यतः रचनात्मकता और विचारों की नवीनता की ओर ले जाता है। अपसारी चिंतन सूचनाओं को सामग्री के रूप में इकट्ठा करने और अंतिम क्रियात्मक समाधान के लिए स्वली और अभिसरण चिंतन को शामिल करती है। कभी-कभी व्यक्ति स्वली चिंतन या मुक्त संगति जिसमें विचार के प्रतीकों के निजी अर्थ होते हैं, में बह सकता है। सामान्यतः अपसारी चिंतन क्षमताओं में प्रवाह, लचीलापन मौलिकता और विस्तार शामिल है।



बुनियादी मनोवैज्ञानिक
प्रक्रियाएं



टिप्पणी



भिन्न सोच (डीटी डायवर्जेंट थिंकिंग) एम काम करने वाले समाधान को खोजने के प्रयास में कई संभावित समाधानों की खोज करके रचनात्मक विचार उत्पन्न करने की क्षमता है। यह एक सामान्य बिन्दु से शुरू होता है और विभिन्न पहलुओं या दृष्टिकोणों को शामिल करने के लिए अलग-अलग दिशाओं में आगे बढ़ता है।

चित्र 11.5 भिन्न सोच के पहलु

11.5.1 रचनात्मक चिंतन की प्रक्रिया

इसके विभिन्न चरण हैं, जो सृजनात्मक चिंतन से पहले आते हैं इसकी शुरुआत निम्न से होती है:-

- **तैयारी-** विचारक समस्या का निर्माण करता है और नए समाधान के लिए आवश्यक तथ्य और सामग्री एकत्र करता है।
- **ऊष्मायन-** इस अवधि में, समाधान में हस्तक्षेप करने वाले विचार फीके पड़ने लगते हैं इस अवधि में अचेतन विचार की प्रक्रिया रचनात्मक चिंतन में शामिल होती है।
- **प्रदीपन-** यहाँ 'आहा' प्रभाव आता है, चेतन में अचानक समाधान का विचार आता है। व्यक्ति को उत्साह और उत्साह की अनुभूति होती है।
- **मूल्यांकन-** प्रकट समाधान की जाँच की जाती है कि यह असंतोषजनक है या नहीं और यदि है तो विचार रचनात्मक प्रक्रिया के प्रारंभ में वापस आ जाता है। समाधानों का परीक्षण और मूल्यांकन किया जाता है।
- **पुनरीक्षण-** अक्सर, अंतर्दृष्टि/ सूझ असंतोषजनक साबित होती है और विचारक पुनः रचनात्मक प्रक्रिया के प्रारंभ में लौट आता है। अन्य मामलों में सूझ सामान्यतः संतोषजनक होता है लेकिन मामूली समस्याओं के समाधान को एक 'अच्छा' नया विचार मानने के लिए कुछ संशोधन की आवश्यकताओं होती है।



यह समझना आवश्यक है कि रचनात्मक चिंतन क्षमता के विकास में अनुवांशिकता ओर पर्यावरणीय कारक दोनों की भूमिका होती है। अभ्यास प्रशिक्षण और प्रेरित वातावरण एक व्यक्ति को समस्या समाधान में अधिक कल्पनाशील, लचीला और मौलिक बनाता है।

11.5.2 रचनात्मक चिंतन में बाधाएं

हमारी रचनात्मक अभिव्यक्ति को कम करने वाले कारक हैं:-

- **अभ्यस्त** (एक विशेष तरीके से चिंतन की आदत)
- **अवधारणात्मक** (किसी समस्या को उसी तरीके से समझना जिस तरह से वह हमेशा समझी जाती है।)
- **अभिप्रेरणात्मक और संवेगात्मक** (अभिप्रेरणा की कमी असफलता का भय, अस्वीकृति का भय, निर्णय का भय, अलग होने का भय)
- **सांस्कृतिक बाधाएँ** (पारंपरिक अपेक्षाओं, रूढ़ियों अनुरूपता पूर्वाग्रह, दूसरों पर निर्भरता, समूह दबाव का अनुपालन)

एक रचनात्मक विचारक बनने के लिए ऊपर चर्चा की गई बाधाओं को हटाना आवश्यक है।

11.5.3 रचनात्मक विचारकों के लक्षण

- **जटिल कार्यों को प्राथमिकता**- ऐसे लोगों को उनके कार्य में असंतुलन और उच्च स्तर की जटिलता पसंद होती है।
- **निर्णयों में स्वतंत्रता**- वे दूसरों से प्रभावित हुए बिना स्वतंत्र रूप से निर्णय लेते हैं। इसलिए उनके लिए आत्म-निर्भरता महत्वपूर्ण है।
- **उच्च जागरूकता और संवेदनशीलता**- रचनात्मक विचारक अपने परिवेश और लोगों के प्रति सतर्क रहते हैं। वे हमेशा ओर अधिक जानने का प्रयास करते हैं।
- **विरोधाभासों और अपूर्णता पर ध्यान देना**- वे सूचनाओं का स्थितियों का विश्लेषण समग्रता और टुकड़ों दोनों तरीके से स्थितियों का विश्लेषण करते हैं। इसलिए उनके लिए अपूर्णता को चिह्नित करना आसान हो जाता है।
- **स्थितियों और वस्तुओं के रहस्यों पर विचार करना** - उनके लिए आसपास के रहस्यों के समाधान की कोशिश और नए तरीके खोजना महत्वपूर्ण हैं।
- **प्रश्न पूछने की कला का विकास करना** - ये लोग दूसरो और स्वयं से प्रश्न करने के कौशल पर भरोसा करते हैं।

बुनियादी मनोवैज्ञानिक
प्रक्रियाएं



टिप्पणी

- **विविध विचारों और समाधानों को उत्पन्न करना** रचनात्मक विचारकों के लिए अपसारी चिंतन एक विशेष गुण है।
- **विचार-मंथन** ये लोग एक समस्या की यथासंभव अधिक से अधिक समाधान खोजने का प्रयास करते हैं।
- **समाधानों पर प्रतिक्रिया प्राप्त करना** - एक बार लागू करने के बाद वे समाधानों के परिणामों का अनुसरण करते हैं और प्रतिक्रिया लेते हैं ताकि भविष्य में बेहतर निष्पादन किया जा सके।
- **तत्काल पुरस्कार के प्रलोभन का प्रतिरोध और हताशा और विफलता से निपटना-** रचनात्मक विचारक उत्साह की देरी में माहिर होते हैं वे सही समय का इंतजार करते हैं और तब सफलता का आनंद लेते हैं।
- **कारणों और परिणामों की कल्पना करना और चीजों की भविष्यवाणी करना-** वे केवल समस्याओं ही प्रयास नहीं करते हैं बल्कि मध्यस्थ कारकों को जानने का प्रयास करते हैं।
- **स्वयं सुरक्षा की जागरूकता-** वे आत्म निरीक्षण पर निर्भर होते हैं। किसी की कमजोरियों और मजबूतियों को जानना उन्हें बेहतर समाधान की ओर ले जाता है।
- **आत्म-सकारात्मकता और आत्मविश्वास-** सकारात्मक आत्म चर्चा रचनात्मक विचारकों की एक महत्वपूर्ण विशेषता है।
- **आत्म-स्वागहता और प्रभुत्व-** निर्णय उनके व्यक्तित्व में दिखाई देता है और वे अपने निर्णयों के प्रति दृढ़ रहते हैं।
- **दमन का खंडन-** रचनात्मक विचारकों द्वारा विचार व्यक्तियों और परिस्थिति का दमन स्वीकार्य नहीं है।



क्रियाकलाप

आप के पास एक रचनात्मक विचार की कितनी विशेषताएँ हैं? जाँच करें।



पाठगत प्रश्न 11.4

1. रचनात्मक चिंतन की बाधाएँ:-



- अ) अवधारणात्मक
- ब) सांस्कृतिक
- स) आदतन/अभ्यस्त
- ड) ऊपर लिखें सभी

2. रचनात्मक चिंतन का पहला चरण है:-

- अ) ऊष्मायन
- ब) तैयारी
- स) पुनरीक्षण
- ड) इनमें से कोई नहीं

11.6 भाषा और विचार

चिंतन केवल अवधारणाओं और प्रतिमाओं पर आधारित नहीं होता है हमारे शब्द और भाषा भी चिंतन प्रक्रिया के लिए आवश्यक है। आइए भाषा और विचार से इसके संबंध पर चर्चा करें।

भाषा का विकास

भाषा किसी व्यक्ति की विभिन्न प्रकार के प्रतीकों और नियमों को संयोजित कर सूचना संप्रेषित करने के लिए उपयोग करने की क्षमता है।

टेबल 11.1 भाषा की संकल्पना

भाषा की अवधारणा में शामिल है			
भाषा की ध्वनियाँ या लिखित तत्व	शब्दों के संयोजन के लिए नियमों	विभिन्न शब्दों के शब्दार्थ/ अर्थों का भंडारण	दूसरो पर का ज्ञान इच्छित प्रभाव डालने के लिए वाणी का उपयोग करना

मानव भाषा का विकास जटिल स्वतः स्फूर्त और रचनात्मक है। बच्चों में भाषा का ग्रहण सामान्यतः एक पूर्व अनुमानित स्वरूप को पालन करता है, जो रोने से कूकने तक, बड़बड़ाने, शब्दानुकरण (ध्वनियों की श्रृंखला का दोहराव स्वरूप में संयोजन) एक शब्द, वाक्यात्मक शब्द वाक्यों या मुहावरों का निर्माण करता है, तब संक्षिप्त भाषण का और अंत में सही नियमों और प्रभाव वाली भाषा का।

बुनियादी मनोवैज्ञानिक
प्रक्रियाएं



टिप्पणी

प्रथम भाषा विकास के चरण

आयु	उपलब्धि	उदाहरण
0-2 महीना	रोना(भूख और असुविधा की अभिव्यक्ति)	आआ, ओओ
2-4 महीना	कूकना (उत्साह या आनंद की अभिव्यक्ति)	गा गा गा
4-9 महीना	बड़बड़ाना गड़गड़ाहटक, शब्दानुकरण में बड़बड़ाना	मा मा मा
9-18 महीना	एक शब्द उच्चारण बच्चों के जीवन से संबंधित लोगों या वस्तुओं से संबंधित	जूस; मामा
18 महीना-2.5 साल	दो शब्द उच्चारण, वाक्य-विन्यास का आरंभ, तीन-शब्द तक उच्चारण विस्तार अधिक संचारी कार्यों के लिए स्वीकृति (टिप्पणी, अस्वीकृति, आग्रह और पूछ-ताछ)	जूस गिर गया पापा जाओ?
2.5-4 साल	संक्षिप्त चरण (एस. वी. ओ.) विस्तृत वाक्य-विन्यास और शब्दावली, बिना व्याकरणिय चिह्नों का कार्यशब्द	मैंने रोटी खाया (i eated bread)

11.6.1 विचार के निर्धारक के रूप में भाषा

जब हम बर्फीले क्षेत्रों में रहने वाले लोगों से बात करते हैं तो उनके पास बर्फ के लिए 6 प्रकार से अधिक संकेत होते हैं जबकि हमारे पास केवल दो या तीन प्रकार के संकेत होते हैं। इसी प्रकार एक भारतीय के पास नजदीकी रिश्तों के लिए विभिन्न पद होते हैं उसकी तुलना में अंग्रेजी बोलने वाले के पास इसके लिए केवल 'अंकल' या 'आंटी' समान शब्द होते हैं।

क्या यह हमें इस नतीजे पर पहुँचाता है कि हमारे सोचने की प्रक्रिया हमारी भाषा में इसके वर्णन पर निर्भर करती है। बेजामिन ली व्होर्फ का विचार था कि भाषा विचार की विषयवस्तु को निर्धारित करती है। यह संस्करणकोण भाषाई सापेक्षता परिकल्पना के रूप में जाना जाता है। यह परिकल्पना इसके लोकप्रिय संस्करण में व्यक्तिगत चिंतन क्या और कैसे का निर्धारण केवल उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषाई श्रेणियों से निर्धारित होती है। इसे भाषा नियतिवाद के नाम से जाना जाता है।

इस संस्करणकोण में कुछ प्रायोगिक तथ्य हैं जो दिखाते हैं कुछ विचार दूसरे भाषा की तुलना में एक भाषा में आसान हो सकते हैं लेकिन कुछ अन्य तथ्य भी हैं जो सभी भाषाओं में विचारों का समान स्तर या गुणवत्ता दर्शाते हैं।

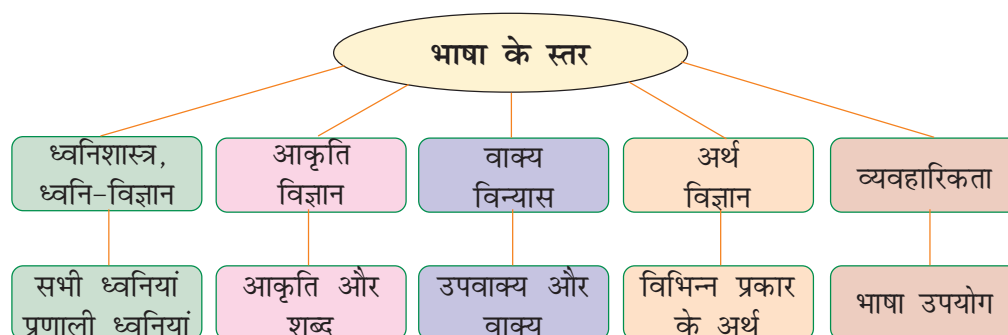
11.6.2 भाषा निर्धारक के रूप में विचार

स्विस मनोवैज्ञानिक जीन पियाजे का मानना था कि विचार न केवल भाषा को निर्धारित है बल्कि इसे बेहतर भी करता है। उनका दृढ़ विश्वास था कि बच्चे चिंतन के माध्यम से दुनिया का एक आंतरिक प्रतिरूप बनाते हैं। जब भी अधिगम के एक विशेष स्थिति से उनका सामना होता है, भले ही उनके पास भाषा तक पहुँच है या नहीं इसमें चिंतन शामिल होता है। उनके लिए भाषा केवल चिंतन का माध्यम है। यह बच्चों के प्रतीकात्मक चिंतन के प्रसार को प्रभावित कर सकता है लेकिन यह विचारों की उत्पत्ति के लिए आवश्यक नहीं है। पियाजे ने बताया कि भाषा प्रतीकों की समझ और नियम के लिए चिंतन और शब्दों की अवधारणा का निर्माण आवश्यक है। इस प्रकार यदि भाषा को समझना और सीखना है तो इसके लिए विचार मूलभूत और आवश्यक है।

बुनियादी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं



टिप्पणी



चित्र 11.7 भाषा विकास के स्तर

रूसी मनोवैज्ञानिक लेव वायगोत्स्की ने तर्क दिया कि दो वर्षों की आयु तक भाषा और विचार अलग-अलग विकसित होते हैं और बाद में एक-दूसरे में विलीन हो जाते हैं। दो साल के पहले कार्यों में विचारों का अनुभव अधिक होते हैं। लगभग 2 वर्ष की आयु में बच्चा मौखिक रूप से विचार व्यक्त करता है और उसकी बोली तर्कसंगतता दर्शाती है। अब बच्चे ध्वनिहीन वाणी का उपयोग करके विचारों में जोड़-तोड़ करते हैं। वायगोत्स्की के अनुसार इसी समय भाषा और चिंतन का विकास एक दूसरे पर निर्भर हो जाता है। जब हम किसी दृश्य या गति कार्य में व्यस्त होते हैं तब विचार बिना भाषा के काम करता है। जब सिर्फ भावनाओं की अभिव्यक्ति होती है तो बिना चिंतन के भाषा का भी उपयोग किया जा सकता है। जब दोनों साथ-साथ कार्य करते हैं तो मौखिक विचार और तार्किक भाषण होता है।

बुनियादी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं



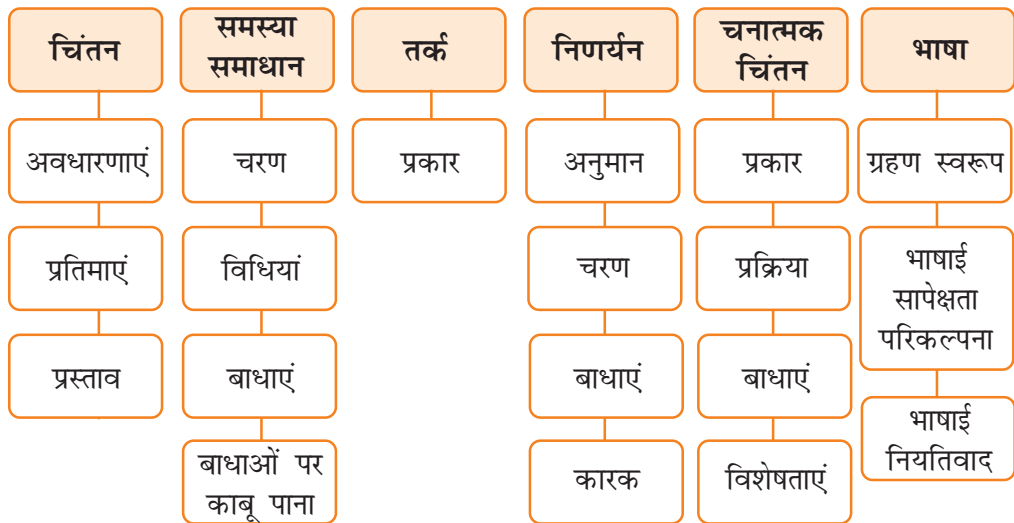
टिप्पणी

भाषा का शिक्षण एक जटिल कार्य है जिसमें आनुवांशिक विशेषताएँ और पर्यावरणीय उत्तेजना दोनों शामिल होती हैं। अलग-अलग मनोवैज्ञानिक भाषा शिक्षण के अलग-अलग कारण बताते हैं।

नॉम चॉम्स्की, एक प्रसिद्ध भाषाविद ने भाषा के विकास का जन्मजात विचार प्रस्तुत किया उन्होंने संकल्पना दी कि बच्चों का एक 'महत्वपूर्ण समय' होता है, जहाँ अधिगम होना चाहिए यदि इसे सफलतापूर्वक होना है। उनका मानना था कि बच्चों में भाषा सीखने की तत्परता अंतर्निहित होती है, यह बताता है कि बच्चे कभी-कभी प्रत्यक्ष शिक्षण के बिना भी भाषा का अधिग्रहण क्यों कर लेते हैं? दूसरी ओर व्यवहारवादियों के अनुसार यह अनुकरण और पुनर्बलन द्वारा विकसित होता है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भाषा और विचार एक दूसरे पर निर्भर होते हैं, स्थितियाँ और परिस्थिति के आधार पर एक-दूसरे का नेतृत्व करते हैं।



आपने क्या सीखा



पाठांत प्रश्न

1. चिंतन की प्रकृति पर चर्चा करें।
2. अवधारणा से आप क्या समझते हैं? प्रस्ताव पर चर्चा करें
3. समस्या समाधान के विभिन्न चरणों पर प्रकाश डालिए। प्रभावी समस्या समाधान में बाधाओं पर चर्चा करें।

4. तर्क के विभिन्न प्रकार क्या हैं?
5. उदाहरण के साथ अनुमान के प्रकारों की चर्चा करें।
6. रचनात्मक चिंतन से आप क्या समझते हैं? रचनात्मक विचारक के विभिन्न विशेषताओं पर प्रकाश डालें।
7. भाषाई सापेक्षता परिकल्पना की व्याख्या करें।
8. भाषा और विचार के बीच के संबंध की जाँच करें।
9. भाषा विकास के चरणों की चर्चा करें।
10. रचनात्मक चिंतन प्रक्रिया का वर्णन करें।



पाठगत प्रश्नों के उत्तर

11.1

1. स्वली
2. प्रस्ताव
3. प्राकृतिक

11.2

1. ड
2. स
3. अ
4. ब

11.3

1. सही
2. गलत
3. गलत

11.4

1. ड
2. ब



मॉड्यूल-3

मानव विकास

मॉड्यूल का उद्देश्य जीवन भर मानव विकास की समझ का निर्माण करना है और विकास के विभिन्न चरणों में प्रमुख विशेषताओं और चुनौतियों से संबंधित है। यह शिक्षार्थियों को विकास और संबंधित अनुभवों के अपने पाठ्यक्रम को प्रतिबिंबित करने में मदद करेगा।

12. विकास पर जीवन काल परिप्रेक्ष्य
13. शैशवावस्था और बचपन
14. किशोरावस्था और युवा वयस्कता
15. प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था